RAMAZAN KI BAHAREN (HINDI BAYAAN)

रमज़ान की बहारें

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में

होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद आने पर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िम्मन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अह़मद बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفُور जब फ़ौत हुवे तो अहले शीराज़ में से किसी ने ख़्वाब में देखा कि वोह शीराज़ की जामेअ़ मस्जिद की मेह़राब में खड़े हैं और उन्हों ने बेहतरीन हुल्ला (या'नी जन्नती लिबास) ज़ेबे तन किया हुवा है और सर पर मोतियों वाला ताज सजा हुवा है। ख़्वाब देखने वाले ने ह़ाल दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला ने मुझे बख़्शा, करम फ़रमाया और ताज पहना कर जन्नत में दाख़िल किया।" पूछा : किस सबब से ? फ़रमाया : "मैं ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ा करता था येही अ़मल काम आ गया।" اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن (القولُ البدیع ص ۲۵۴)

क़ब्र में ख़ूब काम आती है बे कसों की है यारे ग़ार दुरूद
बैठते उठते जागते सोते हो इलाही मेरा शिआ़र दुरूद

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं। फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(معجم کبیر، سہل بن سعد الساعدی... الخ، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा। ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा। ۞ देख कर बयान करूंगा। ۞ पारह 14 सूरतुन्नह्ल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ **(तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" (بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ماذکر عن بنی اسرائیل، ۲/۴۶۲، حدیث: ۳۴۶۱)

www.dawateislami.net

में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ा़तिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

माहे रमज़ान की पहली रात

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़, माया नाज़ व तस्नीफ़े लत़ीफ़ 'फ़ैज़ान सुन्नत जिल्द अव्वल' के बाब '**फ़ैज़ाने रमज़ान**' में है :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जब रमज़ान शरीफ़ की पहली तारीख़ आती है तो अ़र्शे अ़ज़ीम के नीचे से मसीरा (مَ۔ثی۔رَہ) नामी हवा चलती है, जो जन्नत के दरख़्तों के पत्तों को हिलाती है । इस हवा के चलने से ऐसी दिलकश आवाज़ बुलन्द होती है कि इस से बेहतर आवाज़ आज तक किसी ने नहीं सुनी । इस आवाज़ को सुन कर बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें ज़ाहिर होती हैं यहां तक कि जन्नत के बुलन्द मह़ल्लों पर खड़ी हो जाती हैं और कहती हैं : ''है कोई जो हम को **अल्लाह** तआ़ला से मांग ले कि हमारा निकाह़ उस से हो ?'' फिर वोह हूरें दारोग़ए जन्नत (ह़ज़रत) रिज़्वान (عَلَيْهِ السَّلَام) से पूछती हैं : ''आज येह कैसी रात है ?'' (ह़ज़रत) रिज़्वान (عَلَيْهِ السَّلَام) जवाबन तल्बियह (या'नी लब्बैक) कहते हैं, फिर कहते हैं : ''येह माहे रमज़ान की पहली रात है, जन्नत के दरवाज़े उम्मते मुह़म्मदिय्या صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रोज़ेदारों के लिये खोल दिये गए हैं ।''

(الترغیب والترہیب ج۲،ص۶۰،حدیث:۲۳) (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 871)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ रोज़ादारों पर किस दरजा मेहरबान है कि माहे रमज़ान में उन के लिये जन्नत के दरवाज़ों को खोल देता है और माहे रमज़ानुल मुबारक के भी क्या कहने कि इस के इस्तिक़्बाल के लिये सारा साल जन्नत को सजाया जाता है । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक जन्नत इबतिदाई साल से आयिन्दा साल तक रमज़ानुल मुबारक के लिये सजाई जाती है और फ़रमाया : रमज़ान शरीफ़ के पहले दिन जन्नत के दरख़्तों के नीचे से बड़ी बड़ी आंखों वाली ह़ूरों पर हवा चलती है और वोह अ़र्ज़ करती हैं : "ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों में से ऐसे बन्दों को हमारा शोहर बना जिन को देख कर हमारी आंखें ठन्डी हों और जब वोह हमें देखें तो उन की आंखें भी ठन्डी हों ।" (شُعَبُ الایمان ج۳ص۳۱۲حدیث۳۶۳۳)(फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 864)

मरह़बा ! बहुत ही जल्द रमज़ानुल मुबारक का ख़ूब सूरत महीना अपने दामन में रह़मतों और मग़फ़िरतों के ख़ज़ीने लिये हुवे हमारे दरमियान जल्वा गर होने वाला है । माहे रमज़ानुल मुबारक की अ़ज़मत और फ़ज़ीलत का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि जैसे ही येह मुक़द्दस और मुबारक माह अपनी रह़मतों के साथ साया फ़िगन होता तो हमारे प्यारे आक़ा, मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को इस की आमद पर मुबारक बाद देते और ख़ुश ख़बरी सुनाते । चुनान्चे,

रमज़ान की मुबारक बाद

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को ख़ुश ख़बरी सुनाते हुवे इरशाद फ़रमाया करते कि तुम्हारे पास रमज़ान का महीना आया है जो निहायत बा बरकत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर इस के रोज़े फ़र्ज़ फ़रमाए हैं । इस में जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं नीज़ शैत़ानों को बांध दिया जाता है । इस में एक

www.dawateislami.net

ऐसी रात है जो हज़ार महीनों से बेहतर है जो इस की ख़ैर से महरूम रहा वोह बिल्कुल ही महरूम रहा। (مسند امام احمد، مسند ابی ہریرۃ، ۳/۳۳۱، حدیث: ۹۰۰۱)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الْمَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : चूंकी माहे रमज़ान में ह़िस्सी (या'नी महसूस होने वाली) बरकतें भी हैं और ग़ैबी बरकतें भी, इस लिये इस महीने का नाम माहे मुबारक भी है, रमज़ान में क़ुदरती तौ़र पर मोमिनों के रिज़्क़ में बरकत होती है और हर नेकी का सवाब सत्तर (70) गुना या इस से भी ज़ियादा है। इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि माहे रमज़ान की आमद पर ख़ुश होना एक दूसरे को मुबारक बाद देना सुन्नत है और जिस की आमद पर ख़ुशी होना चाहिये, उस के जाने पर ग़म भी होना चाहिये। इसी लिये अक्सर मुसलमान जुमुअ़तुल वदाअ़ को मग़मूम और चश्मे पुर नम होते हैं और ख़ुत़बा इस दिन में कुछ वदाइय्या कलिमात कहते हैं ताकि मुसलमान बाक़ी घड़ियों को ग़नीमत जान कर नेकियों में और ज़ियादा कोशिश करें इन सब का माख़ूज़ येह ह़दीस है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/137 मुल्तक़त़न)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे मदनी माह़ोल में भी रह़मतों और मग़फ़िरतों भरे इस महीने की आमद पर ख़ूब ख़ुशी का समां होता है और इस का भरपूर इस्तिक़्बाल किया जाता है नीज़ जब येह महीना रुख़्सत होता है तो अश्कबार आंखों से इसे **'अल वदाअ़'** किया जाता है।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने माहे रमज़ानुल मुबारक की आमद पर ख़ुशी और मसर्रत का इज़हार करने, रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की इस अ़ज़ीम ने'मत पर इज़हारे शुक्र करने और इस माहे ग़ुफ़रान की अहम्मिय्यत उजागर करने के लिये येह ख़ूब सूरत और प्यारा कलाम लिखा :

www.dawateislami.net

मरहबा ! मरहबा !

मरहबा सद मरहबा फिर आमदे रमज़ान है — खिल उठे मुरझाए दिल ताज़ा हुवा ईमान है
हम गुनाहगारों पे येह कितना बड़ा एहसान है — या ख़ुदा तू ने अ़ता फिर कर दिया रमज़ान है
तुझ पे सदक़े जाऊं रमज़ां तू अ़ज़ीमुश्शान है — कि ख़ुदा ने तुझ में ही नाज़िल किया कुरआन है
अब्रे रहमत छा गया है और समां है नूर नूर — फ़ज़्ले रब से मग़फ़िरत का हो गया सामान है
हर घड़ी रहमत भरी है हर त़रफ़ हैं बरकतें — माहे रमज़ां रहमतों और बरकतों की कान है
आ गया रमज़ां इबादत पर कमर अब बांध लो — फ़ैज़ ले लो जल्द कि दिन तीस का मेहमान है
आसियों की मग़फ़िरत का ले कर आया है पयाम — झूम झाओ मुजरिमो रमज़ां महे ग़ुफ़रान है
भाइयो कर लो गुनाहों से सभी तौबा कि अब — पड़ गए दोज़ख़ पे ताले क़ैद में शैत़ान है
ख़ुश दिली से सुन्नतें अपनाए जाओ भाइयो — ख़ुल्द के दर खुल गए हैं दाख़िला आसान है
मस्जिदें आबाद हैं ज़ोरे गुनह कम हो गया — माहे रमज़ानुल मुबारक का येह सब फ़ैज़ान है
रोज़ादारो झूम जाओ क्यूंकि दीदारे ख़ुदा — ख़ुल्द में होगा तुम्हें येह वा'दए रहमान है
दो जहां की ने'मतें मिलती हैं रोज़ादार को — जो नहीं रखता है रोज़ा वोह बड़ा नादान है
या इलाही तू मदीने में कभी रमज़ां दिखा — मुद्दतों से दिल में येह 'अ़त्तार' के अरमान है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हर शब साठ(60) हज़ार की बख़्शिश

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहनशाहे ज़ीशान, मक्की मदनी सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : ''रमज़ान शरीफ़ की हर शब आस्मानों में सुब्हे़ सादिक़ तक एक मुनादी येह निदा करता है : ऐ अच्छाई मांगने वाले ! मुकम्मल कर (या'नी **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त की त़रफ़ आगे बढ़) और ख़ुश हो जा। और ऐ शरीर ! शर से बाज़ आ जा और इ़ब्रत ह़ासिल कर। है कोई मग़फ़िरत का त़ालिब ! कि उस की त़लब पूरी की जाए। है कोई तौबा करने वाला ! कि उस की तौबा क़बूल की जाए। है कोई दुआ़ मांगने वाला ! कि उस की दुआ़

www.dawateislami.net

क़बूल की जाए । है कोई साइल ! कि उस का सुवाल पूरा किया जाए । अल्लाह तआ़ला रमज़ानुल मुबारक की हर शब में इफ़्त़ार के वक़्त साठ हज़ार (60,000) गुनाहगारों को दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमा देता है । और ईद के दिन सारे महीने के बराबर गुनाहगारों की बख़्शिश की जाती है ।''

(اَلدُّرُّالمَنْثُور ج ا ص ١٤٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माहे रमज़ान की साअ़तें कितनी बा बरकत हैं कि हर लम्ह़ा बन्दों में रह़मत व मग़्फ़िरते इलाही तक़्सीम हो रही है । येह वोह माहे मुक़द्दस है जिस के दिन रोज़ों में और रातें तिलावते कलामे पाक में सर्फ़ होती हैं और येही दोनों चीज़ें या'नी रोज़ा और क़ुरआन रोज़े मह़शर मुसलमान के लिये शफ़ाअ़त का सामान भी फ़राहम करेंगे । चुनान्चे,

रोज़ा व क़ुरआन शफ़ाअ़त करेंगे

रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : रोज़ा और क़ुरआन बन्दे के लिये क़ियामत के दिन शफ़ाअ़त करेंगे । रोज़ा अ़र्ज़ करेगा : ऐ रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ मैं ने खाने और ख़्वाहिशों से दिन में इसे रोक दिया, मेरी शफ़ाअ़त इस के ह़क़ में क़बूल फ़रमा । क़ुरआन कहेगा : मैं ने इसे रात में सोने से बाज़ रखा, मेरी शफ़ाअ़त इस के लिये क़बूल कर । पस दोनों की शफ़ाअ़तें क़बूल होंगी । (مُسند امام احمد ج ٢ ص ٥٨٦ حديث ٦٦٣٧)

बख़्शिश का बहाना

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : ''अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को उम्मते मुह़म्मदी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अ़ज़ाब करना मक़्सूद होता तो इन को रमज़ान और सूरए 'قُلْ هُوَاللهُ' शरीफ़ हरगिज़ इनायत न फ़रमाता ।''

(نُزْهَةُ المجالس ج ا ص ٢١٦) (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 874)

डर था कि इ़स्यां की सज़ा अब होगी या रोज़े जज़ा
दी उन की रह़मत ने सदा येह भी नहीं, वोह भी नहीं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इबादत पर कमर बस्ता हो जाते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिल ख़ुसूस माहे रमज़ान में हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ूब ख़ूब इ़बादत करनी चाहिये और हर वोह काम करना चाहिये कि जिस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा हो । अगर इस पाकीज़ा महीने में भी कोई अपनी बख़्शिश न करवा सका तो फिर कब करवाएगा ? हमारे प्यारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस मुबारक महीने की आमद के साथ ही इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में बहुत ज़ियादा मगन हो जाया करते थे । चुनान्चे,

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : ''जब माहे रमज़ान आता तो मेरे सरताज, साहि़बे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत के लिये कमर बस्ता हो जाते और सारा महीना अपने बिस्तरे मुनव्वर पर तशरीफ़ न लाते ।''

(اَلدُّرُّ الْمَنْثُور ج ۱ ص ۴۴۹) (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 876)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि पूरा माहे रमज़ान अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने और उस की इ़बादत में सर्फ़ कर दें । यक़ीनन जिसे रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल हो जाए दुन्या व आख़िरत में उस का बेड़ा पार हो जाता है और माहे रमज़ान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने का बेहतरीन ज़रीआ़ है । येह बड़ी शानो अ़ज़मत वाला महीना है इस की बे शुमार ख़ुसूसिय्यात हैं जिन में से एक ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इसी माहे मुबारक में क़ुरआने पाक नाज़िल फ़रमाया । चुनान्चे, पारह 2, सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 185 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का नुज़ूले क़ुरआन और माहे रमज़ान के बारे में फ़रमाने आ़लीशान है :

www.dawateislami.net

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْیَصُمْهُؕ وَ مَنْ كَانَ مَرِیْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَیَّامٍ اُخَرَؕ یُرِیْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْیُسْرَ وَ لَا یُرِیْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ٘ وَ لِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ﴿۱۸۵﴾ (پ۲، البقرۃ: ۱۸۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *रमज़ान का महीना, जिस में कुरआन उतरा, लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की रोशन बातें, तो तुम में जो कोई येह महीना पाए ज़रूर इस के रोज़े रखे और जो बीमार या सफ़र में हो, तो उतने रोज़े और दिनों में। अल्लाह तुम पर आसानी चाहता है और तुम पर दुश्वारी नहीं चाहता और इस लिये कि तुम गिनती पूरी करो और अल्लाह की बड़ाई बोलो इस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत की और कहीं तुम ह़क़ गुज़ार हो।*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस आयते मुक़द्दसा के अन्दर अल्लाह तबारक व तआ़ला ने माहे रमज़ान में रोज़े रखने का हुक्म भी फ़रमाया है। याद रहे कि तौह़ीद व रिसालत का इक़रार करने और तमाम ज़रूरियाते दीन पर ईमान लाने के बा'द जिस त़रह़ हर मुसलमान पर नमाज़ फ़र्ज़ क़रार दी गई है, इसी त़रह़ रमज़ान शरीफ़ के रोज़े भी हर मुसलमान (मर्द व औ़रत) आ़क़िल व बालिग़ पर फ़र्ज़ हैं। दुर्रे मुख़्तार में है : रोज़े दस (10) शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सिने 2 हिजरी को फ़र्ज़ हुवे। (دُرِّمُختار مع رَدُّالْمُحتار ج۳ص۳۳۰)

रोज़ा फ़र्ज़ होने की वजह

इस्लाम में अक्सर आ'माल किसी न किसी रूह़ परवर वाक़िए की याद ताज़ा करने के लिये मुक़र्रर किये गए हैं। मसलन : सफ़ा और मरवा के दरमियान ह़ाजियों की सई ह़ज़रते सय्यिदतुना हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की यादगार है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने लख़्ते जिगर ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल ज़बीहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये पानी तलाश करने के लिये इन दोनों पहाड़ों के दरमियान सात बार चली और दौड़ी थीं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ह़ज़रते सय्यिदतुना हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की येह अदा पसन्द आ गई, लिहाज़ा इसी सुन्नते हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बाक़ी रखते हुवे ह़ाजियों

www.dawateislami.net

और उ़मरह करने वालों के लिये सफ़ा व मरवा की सई को वाजिब कर दिया। इसी त़रह़ माहे रमज़ानुल मुबारक में से कुछ दिन हमारे प्यारे सरकार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ारे हि़रा में गुज़ारे थे। इस दौरान आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दिन को खाने से परहेज़ करते और रात को ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल रहते थे। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन दिनों की याद ताज़ा करने के लिये रोज़े फ़र्ज़ किये ताकि उस के मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत क़ाइम रहे। (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 935)

रोज़ादार का ईमान कितना पुख़्ता है !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सख़्त गर्मी है, प्यास से ह़ल्क़ सूख रहा है, होंट ख़ुश्क हो रहे हैं, पानी मौजूद है मगर रोज़ादार उस की त़रफ़ देखता तक नहीं, खाना मौजूद है भूक की शिद्दत से ह़ालत दिगर गूं है, मगर वोह खाने की त़रफ़ हाथ तक नहीं बढ़ाता। आप अन्दाज़ा फ़रमाइये, उस शख़्स का ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ पर कितना पुख़्ता ईमान है क्यूंकि वोह जानता है कि उस की ह़रकत सारी दुन्या से तो छुप सकती है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पोशीदा नहीं रह सकती। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर उस का येह यक़ीने कामिल रोज़े का अ़मली नतीजा है। क्यूंकि दूसरी इबादतें किसी न किसी ज़ाहिरी ह़रकत से अदा की जाती हैं मगर रोज़े का तअ़ल्लुक़ बात़िन से है। इस का ह़ाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता, अगर वोह छुप कर खा-पी ले तब भी लोग तो येही समझते रहेंगे कि येह रोज़ादार है। मगर वोह मह्ज़ ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के बाइस खाने पीने से अपने आप को बचा रहा है। (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 937) येही वजह है कि रोज़ादारों को ढेरों इन्आ़मात और अज्रो सवाब से नवाज़ा जाएगा, आइये रोज़े के फ़ज़ाइल पर चन्द रिवायात सुनते हैं।

साबिक़ा गुनाहों का कफ़्फ़ारा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस

www.dawateislami.net

ने रमज़ान का रोज़ा रखा और इस की हुदूद को पहचाना और जिस चीज़ से बचना चाहिये, उस से बचा तो जो (कुछ गुनाह) पहले कर चुका है उस का कफ़्फ़ारा हो गया।" (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبّان ج۵ص۱۸۳حدیث۳۴۲۴)

रोज़े की जज़ा

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सुल्ताने दो जहान, शहनशाहे कौनो मकान, रहमते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "आदमी के हर नेक काम का बदला दस (10) से सात सो (700) गुना तक दिया जाता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "اِلَّا الصَّوْمَ فَاِنَّہٗ لِیْ وَاَنَا اَجْزِیْ بِہٖ" सिवाए रोज़े के कि रोज़ा मेरे लिये है और इस की जज़ा मैं ख़ुद दूंगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मज़ीद इरशाद है : बन्दा अपनी ख़्वाहिश और खाने को सिर्फ़ मेरी वजह से तर्क करता है। रोज़ादार के लिये दो (2) ख़ुशियां है एक इफ़्तार के वक़्त और एक अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात के वक़्त। रोज़ादार के मुंह की बू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक मुश्क से ज़ियादा पाकीज़ा है।"

(صحیح مسلم ص۵۸۰حدیث۱۱۵۱)

मज़ीद इरशाद है : रोज़ा सिपर (या'नी ढाल) है और जब किसी के रोज़े का दिन हो तो न बे हूदा बके और न ही चीख़े। फिर अगर कोई और शख़्स इस से गालम गलोच करे या लड़ने पर आमादा हो, तो कह दे, मैं रोज़ादार हूं। (صحیح بخاری ج۱ص۶۲۴حدیث۱۸۹۴)

रोज़े का ख़ुसूसी इन्आ़म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा अह़ादीसे मुबारका में रोज़े की कई ख़ुसूसिय्यात इरशाद फ़रमाई गई हैं। कितनी प्यारी बिशारत है उस रोज़ादार के लिये जिस ने इस त़रह़ रोज़ा रखा जिस त़रह़ रोज़ा रखने का ह़क़ है। या'नी खाने पीने और जिमाअ़ से बचने के साथ साथ अपने तमाम आ'ज़ा को भी गुनाहों से बाज़ रखा तो वोह रोज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से उस के लिये तमाम पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो गया और ह़दीसे मुबारक का येह फ़रमाने आ़लीशान तो ख़ास त़ौर पर क़ाबिले तवज्जोह है जैसा कि सरकारे

www.dawateislami.net

नामदार, बिइज़्ने परवर दगार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहनशाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ख़ुशगवार सुनाते हैं : فَاِنَّهٗ لِیْ وَاَنَا اَجْزِیْ بِهٖ या'नी रोज़ा मेरे लिये है और इस की जज़ा मैं ख़ुद ही दूंगा। ह़दीसे क़ुदसी के इस इरशादे पाक को बा'ज़ मुह़द्दिसीने किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने "اَنَا اُجْزٰی بِهٖ" भी पढ़ा है, जैसा कि तफ़्सीरे नईमी वग़ैरा में है तो फिर मा'ना येह होंगे : "रोज़े की जज़ा मैं ख़ुद ही हूं।" سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ या'नी रोज़ा रख कर रोज़ादार ब ज़ाते ख़ुद **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ही को पा लेता है।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 945 ता 947)

सोना भी इबादत है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, मदीने के ताजदार, दिलबरों के दिलबर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुनव्वर है : "रोज़ादार का सोना इबादत और उस की ख़ामोशी तस्बीह़ करना और उस की दुआ़ क़बूल और उस का अ़मल मक़्बूल होता है।" (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۴۱۵حدیث۳۹۳۸) سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ रोज़ादार किस क़दर बख़्तवर है कि उस का सोना बन्दगी, ख़ामोशी तस्बीह़े ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ दुआएं और आ'माले ह़सना मक़्बूले बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ हैं।

तेरे करम से ऐ करीम ! कौन सी शै मिली नहीं
झोली हमारी तंग है तेरे यहां कमी नहीं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आ'ज़ा का तस्बीह़ करना

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो बन्दा रोज़े की ह़ालत में सुब्ह़ करता है, उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और उस के आ'ज़ा तस्बीह़ करते हैं और आस्माने दुन्या पर रहने वाले (फ़िरिश्ते) उस के लिये सूरज डूबने तक

www.dawateislami.net

मग़फ़िरत की दुआ करते रहते हैं। अगर वोह एक या दो (2) रक्अ़तें पढ़ता है तो येह आस्मानों में उस के लिये नूर बन जाती हैं और हूरे ऐन (या'नी बड़ी आंखों वाली हूरों) में से उस की बीवियां कहती हैं : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू इस को हमारे पास भेज दे, हम इस के दीदार की बहुत ज़ियादा मुश्ताक़ हैं और अगर वोह لَآاِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ या سُبْحٰنَ اللّٰہِ या اَللّٰہُ اَکْبَر पढ़ता है तो सत्तर हज़ार (70,000) फ़िरिश्ते उस का सवाब सूरज डूबने तक लिखते रहते हैं।"

(شُعَبُ الایمان ج۳ص۲۹۹حدیث۳۵۹۱)

سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ रोज़ादार के तो वारे ही नियारे हैं कि उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खुलें, उस के जिस्म के आ'ज़ा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ करें, आस्माने दुन्या पर रहने वाले मलाइका गुरूबे आफ़्ताब तक उस के लिये दुआए मग़फ़िरत मांगें, नमाज़ पढ़े तो उस के लिये आस्मान में रोशनी हो और हूरे ऐन या'नी बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें जो उस के लिये मुक़र्रर हुई हैं, वोह जन्नत में उस की आमद का इन्तिज़ार करें, لَآاِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ या سُبْحٰنَ اللّٰہِ या اَللّٰہُ اَکْبَر कहे तो सत्तर हज़ार (70,000) फ़िरिश्ते गुरूबे आफ़्ताब तक उस का सवाब लिखें। (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 956)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या में तो रोज़ादारों पर रह़मते इलाही की छमा छम बारिशें होंगी ही, आख़िरत में भी इन को अ़ज़ीमुश्शान मक़ामो मर्तबा ह़ासिल होगा। चुनान्चे,

सोने का दस्तर ख़्वान

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, मालिके जन्नत, साक़िये कौसर, मह़बूबे रब्बे दावर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर असर है : "क़ियामत वाले दिन रोज़ादारों के लिये एक सोने का दस्तर ख़्वान रखा जाएगा, ह़ालांकि लोग (ह़िसाब किताब के) मुन्तज़िर होंगे।"

(کَنْزُ الْعُمّال ج۸ص۲۱۴حدیث۲۳۶۴۰)

www.dawateislami.net

जन्नती फल

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है : इमामुस्साबिरीन, सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : ''जिस को रोज़े ने खाने या पीने से रोक दिया कि जिस की उसे ख़्वाहिश थी, तो **अल्लाह** तआ़ला उसे जन्नती फलों में से खिलाएगा और जन्नती शराब से सैराब करेगा।'' (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۴۱۰حدیث۳۹۱۷)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जब आ'माल की जज़ा मिलने की बारी आएगी तो रोज़ादारों को बेह़द व बे ह़िसाब अज्र दिया जाएगा। चुनान्चे,

बे ह़िसाब अज्र

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है, फ़रमाते हैं : ''बरोज़े क़ियामत एक मुनादी इस त़रह़ निदा करेगा हर बोने वाले (या'नी अ़मल करने वाले) को उस की खेती (या'नी अ़मल) के बराबर अज्र दिया जाएगा, सिवा कुरआन वालों (या'नी आ़लिमे कुरआन) और रोज़ादारों के कि इन्हें बेह़द व बे ह़िसाब अज्र दिया जाएगा।'' (شُعَبُ الاِیمان ج۳ص۴۱۳حدیث۳۹۲۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या में जैसा बोएंगे वैसा काटेंगे। उ़लमाए किराम और रोज़ादार बहुत ही नसीब दार हैं, कि बरोज़े क़ियामत उन को बे ह़िसाब सवाब से नवाज़ा जाएगा।

जब रोज़ादार जन्नत में दाख़िल होने लगेंगे तो उस वक़्त भी उन्हें ख़ुसूसी ए'ज़ाज़ से नवाज़ा जाएगा। जैसा कि,

जन्नती दरवाज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, माहे नबुव्वत, महरे रिसालत, मम्बए जूदो सख़ावत, क़ासिमे ने'मत, सरापा रह़मत, शाफ़ेए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है :

www.dawateislami.net

"बे शक जन्नत में एक दरवाज़ा है जिस को **रय्यान** कहा जाता है, इस से क़ियामत के दिन रोज़ादार दाख़िल होंगे इन के इलावा कोई और दाख़िल न होगा। कहा जाएगा : रोज़ेदार कहां हैं ? पस येह लोग खड़े होंगे, इन के इलावा कोई और इस दरवाज़े से दाख़िल न होगा। जब येह दाख़िल हो जाएंगे तो दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा, पस फिर कोई इस दरवाज़े से दाख़िल न होगा।" (صحیح بخاری ج۱ص۶۲۵حدیث۱۸۹۶)

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ रोज़ादारों का भी ख़ूब मुक़द्दर है। बरोज़े क़ियामत इन का ख़ुसूसी ए'ज़ाज़ होगा। जाना जन्नत ही में है, दीगर ख़ुश क़िस्मत भी जूक़ दर जूक़ दाख़िले जन्नत हो रहे होंगे मगर रोज़ादार ख़ुसूसी तौ़र पर '**बाबुर्रय्यान**' से दाख़िले जन्नत होंगे।

याद रखिये ! जिस त़रह़ रोज़ा रखना बहुत बड़ी फ़ज़ीलत और सआ़दत की बात है, इसी त़रह़ रोज़ा न रखना भी मह़रूमी और बद बख़्ती का बाइस है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : مَنْ اَدْرَکَ رَمَضَانَ وَلَمْ یَصُمْہُ فَقَدْ شَقِیَ या'नी जिस ने माहे रमज़ान को पाया और इस के रोज़े न रखे, वोह शख़्स शक़ी (या'नी बद बख़्त) है। (معجم الاوسط، ۳/۶۲، حدیث: ۳۸۷۱)

एक रोज़ा छोड़ने का नुक़्सान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रमज़ान शरीफ़ का एक रोज़ा जो बिला किसी उ़ज़्रे शरई जान बूझ कर ज़ाएअ़ कर दे तो अब उ़म्र भर भी अगर रोज़े रखता रहे, तब भी इस छोड़े हुवे एक रोज़े की फ़ज़ीलत को नहीं पा सकता। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे वाला तबार, बिइ़ज़्ने परवर दगार, दो जहां के मालिको मुख़्तार, शहनशाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ने रमज़ान के एक दिन का रोज़ा बिग़ैर रुख़्सते मरज़, इफ़्त़ार किया (या'नी न रखा) तो ज़माने भर का रोज़ा भी इस की क़ज़ा नहीं हो सकता, अगर्चे बा'द में रख भी ले।" (صحیح بخاری ج۱ص۶۳۸حدیث۱۹۳۴)

www.dawateislami.net

या'नी वोह फ़ज़ीलत जो रमज़ानुल मुबारक में रोज़ा रखने की थी अब किसी त़रह़ नहीं पा सकता । लिहाज़ा हमें हरगिज़ हरगिज़ ग़फ़्लत का शिकार हो कर रोज़ए रमज़ान जैसी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत नहीं छोड़नी चाहिये ।

नीज़ इस माहे मुबारक के ह़क़ को अच्छी त़रह़ अदा करना चाहिये, कहीं ऐसा न हो कि रमज़ान के ह़क़ में कोताही के सबब हम मग़्फ़िरत से मह़रूम हो जाएं । याद रखिये ! जो इस माह भी मग़्फ़िरत से मह़रूम रहा, वोह बहुत बड़े ख़सारे में है । जैसा कि,

नाक मिट्टी में मिल जाए

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस शख़्स की नाक मिट्टी में मिल जाए कि जिस के पास मेरा ज़िक्र किया गया तो उस ने मेरे ऊपर दुरूद नहीं पढ़ा और उस शख़्स की नाक मिट्टी में मिल जाए जिस पर रमज़ान का महीना दाख़िल हुवा, फिर उस की मग़्फ़िरत होने से क़ब्ल गुज़र गया और उस आदमी की नाक मिट्टी में मिल जाए कि जिस के पास उस के वालिदैन ने बुढ़ापे को पा लिया और उस के वालिदैन ने उस को जन्नत में दाख़िल नहीं किया । (या'नी बुढ्ढे मां-बाप की ख़िदमत कर के जन्नत ह़ासिल न कर सका)

(مسند احمد ج۳ ص۶۱ حدیث ۷۴۵۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि इस माहे मुबारक की बरकतें और रह़मतें समेटने नीज़ रब्बे ग़फ़्फ़ार جَلَّ جَلَالُہٗ की बारगाह से मग़्फ़िरत का इन्आ़म ह़ासिल करने के लिये माहे रमज़ान में ख़ूब इबादत करें और नेकियों के लिये कमर बस्ता हो जाएं । ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है, लिहाज़ा इन लम्ह़ात को ग़नीमत जानिये और माहे रमज़ान की मुक़द्दस साअ़तों को फ़ुज़ूलिय्यात व ख़ुराफ़ात में बरबाद करने के बजाए, तिलावते क़ुरआन, ज़िक्रो दुरूद और दीगर नेक कामों में गुज़ारने की कोशिश कीजिये ।

www.dawateislami.net

ए'तिकाफ़ की बहारें लूटिये

आइये ! एह़तिरामे माहे रमज़ानुल मुबारक का दिल में जज़्बा बढ़ाने, इस की ख़ूब बरकतें पाने, ढेरों ढेर नेकियां कमाने और ख़ुद को गुनाहों से बचाने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले पूरे माहे रमज़ान या आख़िरी अ़शरे के ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल कर लीजिये । ए'तिकाफ़ की भी क्या ख़ूब फ़ज़ीलत है । चुनान्चे,

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सरकारे अबदे क़रार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : مَنِ اعْتَكَفَ اِيْمَانًا وَّاحْتِسَابًا غُفِرَلَهٗ مَاتَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ या'नी जिस शख़्स ने ईमान के साथ सवाब ह़ासिल करने की निय्यत से ए'तिकाफ़ किया, उस के तमाम पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे । (جامع صغیر ص ۵۱۶ الحدیث ۸۴۸۰)

सारे महीने का ए'तिकाफ़

हमारे प्यारे प्यारे और रह़मत वाले आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा जूई के लिये हर वक़्त कमर बस्ता रहते थे और ख़ुसूसन रमज़ान शरीफ़ में इ़बादत का ख़ूब ही एहतिमाम फ़रमाया करते । चूंकि माहे रमज़ान ही में शबे क़द्र को भी पोशीदा रखा गया है, लिहाज़ा इस मुबारक रात को तलाश करने के लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बार पूरे माहे मुबारक का ए'तिकाफ़ फ़रमाया । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : एक मरतबा सुल्त़ाने दो जहान, शहनशाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यकुम रमज़ान से 20 रमज़ान तक ए'तिकाफ़ करने के बा'द इरशाद फ़रमाया : मैं ने शबे क़द्र की तलाश के लिये रमज़ान के पहले अ़शरे का ए'तिकाफ़ किया, फिर दरमियानी अ़शरे का ए'तिकाफ़ किया, फिर मुझे बताया गया कि शबे क़द्र आख़िरी अ़शरे में है, लिहाज़ा तुम में से जो शख़्स मेरे साथ ए'तिकाफ़ करना चाहे वोह कर ले । (صحیح مسلم ص ۵۹۴ حدیث ۱۱۶۷)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी अगर हर साल न सही कम अज़ कम ज़िन्दगी में एक बार इस अदाए मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अदा करते हुवे पूरे माहे रमज़ानुल मुबारक का ए'तिकाफ़ कर लेना चाहिये ।

यूं भी मस्जिद में पड़ा रहना बहुत बड़ी सआ़दत है और मो'तकिफ़ की तो क्या बात है कि रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने के लिये अपने आप को तमाम मशाग़िल से फ़ारिग़ कर के मस्जिद में डेरे डाल देता है । फ़तावा आ़लमगीरी में है : ''ए'तिकाफ़ की ख़ूबियां बिल्कुल ही ज़ाहिर हैं क्यूंकि इस में बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये कुल्लियतन (या'नी मुकम्मल त़ौर पर) अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मुन्हमिक (مُنْهَمِك) कर देता है और उन तमाम मशाग़िले दुन्या से किनारा कश हो जाता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब की राह में ह़ाइल होते हैं और मो'तकिफ़ के तमाम अवक़ात ह़क़ीक़तन या ह़ुक्मन नमाज़ में गुज़रते हैं । (क्यूंकि नमाज़ का इन्तिज़ार करना भी नमाज़ की त़रह़ सवाब रखता है) और ए'तिकाफ़ का मक़्सूदे अस्ली जमाअ़त के साथ नमाज़ का इन्तिज़ार करना है और मो'तकिफ़ उन (फ़िरिश्तों) से मुशाबहत रखता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़ुक्म की नाफ़रमानी नहीं करते और जो कुछ उन्हें ह़ुक्म मिलता है उसे बजा लाते हैं और उन के साथ मुशाबहत रखता है जो शबो रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ (पाकी) बयान करते रहते हैं और इस से उकताते नहीं ।'' (فتاوی عالمگیری ج۱ص۲۱۲)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा ख़ुरासानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي फ़रमाते हैं : ''मो'तकिफ़ की मिसाल उस शख़्स की सी है जो **अल्लाह** तआ़ला के दर पर आ पड़ा हो और येह कह रहा हो : ''या **अल्लाह** रब्बल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ जब तक तू मेरी मग़्फ़िरत नहीं फ़रमा देगा मैं यहां से नहीं टलूंगा ।'' (شُعَبُ الایمان ج۳ص۴۲۶حدیث۳۹۷۰)

हम से फ़क़ीर भी अब फेरी को उठते होंगे
अब तो ग़नी के दर पर बिस्तर जमा दिये हैं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बिग़ैर किये नेकियों का सवाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ए'तिकाफ़ के बे शुमार फ़वाइद हैं जिन में से एक बहुत बड़ा फ़ाइदा येह भी है कि जितने दिन मुसलमान ए'तिकाफ़ में रहेगा, गुनाहों से बचा रहेगा क्यूंकि जो गुनाह वोह बाहर रह कर करता, उन से भी महफ़ूज़ रहेगा । लेकिन येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ास रहमत है कि बाहर रह कर जो नेकियां वोह किया करता था, ए'तिकाफ़ की हालत में अगर्चे वोह उन को अन्जाम न दे सकेगा मगर फिर भी वोह उस के नामए आ'माल में ब दस्तूर लिखी जाती रहेंगी और उसे उन का सवाब भी मिलता रहेगा । मसलन कोई इस्लामी भाई मरीज़ों की इयादत करता था और ए'तिकाफ़ की वजह से येह काम नहीं कर सका तो इस के सवाब से महरूम नहीं होगा बल्कि इस को ऐसा ही सवाब मिलता रहेगा जैसे वोह खुद इस को अन्जाम देता रहा हो । जैसा कि

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सुल्ताने ज़ीशान, रहमते आ़मिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तहफ़्फ़ुज़ निशान है : هُوَيَعْكِفُ الذُّنُوْبَ يُجْرٰى لَهٗ مِنَ الْحَسَنَاتِ كَعَامِلِ الْحَسَنَاتِ كُلِّهَا या'नी ए'तिकाफ़ करने वाला गुनाहों से बचा रहता है और उस के लिये तमाम नेकियां लिखी जाती हैं जैसे उन के करने वाले के लिये होती हैं । (ابن ماجہ ج۲ص۳۶۵حدیث۱۷۸۱)

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल है : मो'तकिफ़ को हर रोज़ एक हज का सवाब मिलता है ।" (شعب الایمان، ج۳،ص۴۲۵، الحدیث ۳۹۶۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ैज़ाने रमज़ान का तआरुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी आप ने जो ए'तिकाफ़ के अज़ीमुश्शान फ़ज़ाइल समाअ़त किये, येह शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की माया नाज़ तस्नीफ़ '**फ़ैज़ाने सुन्नत**' से लिये गए हैं, येह एक ऐसी किताब है जिस में माहे रमज़ानुल मुबारक से मुतअ़ल्लिक़ा तमाम अहम बातें मसलन : रमज़ानुल मुबारक के फ़ज़ाइल, रोज़े के फ़ज़ाइल व

www.dawateislami.net

अह़काम, तरावीह़ के मसाइल, सह़र (سحر) व इफ़्तार के मुतअ़ल्लिक़ा अह़काम, ए'तिकाफ़ का बयान, सदक़ए फ़ित्र नीज़ ईदुल फ़ित्र के अह़काम व मसाइल भी बयान किये गए हैं। चूंकि रोज़े हम पर फ़र्ज़ हैं, लिहाज़ा इस के मसाइल सीखना भी हमारे लिये ज़रूरी हैं और '**फ़ैज़ाने रमज़ान**' में रोज़े के उ़मूमी मसाइल व अह़काम दर्ज हैं, इस लिये तमाम इस्लामी भाइयों को चाहिये कि इस किताब को ज़रूर पढें बल्कि हो सके तो हदिय्यतन ह़ासिल कर के दीगर इस्लामी भाइयों तक पहुंचाएं नीज़ इस अ़ज़ीमुश्शान किताब को अपने घरों में भी रखें ताकि हमारे घर की इस्लामी बहनें भी माहे रमज़ान से मुतअ़ल्लिक़ा शरई मसाइल के बारे में दुरुस्त आगाही ह़ासिल कर सकें, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अज्रो सवाब का ख़ज़ाना हाथ आएगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की जानिब से दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक के जुदा जुदा शहरों में इजतिमाई ए'तिकाफ़ की तरकीब की जाती है, जिस में दा'वते इस्लामी के मर्कज़ी मजलिसे शूरा की जानिब से बा क़ाइदा तर्बिय्यती जदवल पेश किया जाता है। इस इजतिमाई ए'तिकाफ़ का आग़ाज़ कुछ यूं हुवा कि

दा'वते इस्लामी के मा'रिज़े वुजूद में आने से दो तीन साल पहले रमज़ानुल मुबारक में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने नूर मस्जिद काग़ज़ी बाज़ार मीठा दर बाबुल मदीना (कराची) (जहां आप इमामत भी फ़रमाते थे) में तन्हा ए'तिकाफ़ किया। फिर अगले साल आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की इनफ़िरादी कोशिश से मज़ीद दो[2] इस्लामी भाई आप के साथ ए'तिकाफ़ करने के लिये तय्यार हो गए। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की मिलन सारी की आ़दत और इनफ़िरादी कोशिशों की बरकत से एक साल ऐसा आया कि मो'तकिफ़ीन की ता'दाद 28 तक पहुंच गई। इस इजतिमाई ए'तिकाफ़ की दूर दूर तक धूम मच गई।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उसी साल दा'वते इस्लामी का सूरज तुलूअ़ हो गया और दा'वते इस्लामी के अव्वलीन मदनी मर्कज़ गुलज़ारे ह़बीब मस्जिद (गुलिस्ताने औकाड़वी, बाबुल मदीना कराची) में दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम पहला इजतिमाई ए'तिकाफ़ किया गया, कमो बेश साठ (60) इस्लामी भाइयों ने शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मइ़य्यत (या'नी हमराही) में ए'तिकाफ़ करने की सआ़दत पाई, बढ़ते बढ़ते (ता दमे तह़रीर) येह सिलसिला न सिर्फ़ पाकिस्तान बल्कि दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में पहुंच गया है, यूं दुन्या की बे शुमार मसाजिद में पूरे माहे रमज़ानुल मुबारक और आख़िरी अ़शरे के ए'तिकाफ़ का एहतिमाम किया जाता है । इन में हज़ारहा इस्लामी भाई मो'तकिफ़ हो कर दीगर इबादात के साथ साथ इ़ल्मे दीन ह़ासिल करते और सुन्नतों की तर्बिय्यत पाते हैं । नीज़ कई मो'तकिफ़ीन इख़्तितामे रमज़ानुल मुबारक पर चांद रात ही से आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बन जाते हैं । इस इजतिमाई ए'तिकाफ़ की भी ख़ूब बहारें हैं । चुनान्चे,

इजतिमाई ए'तिकाफ़ की मदनी बहार

मर्कज़ुल औलिया (लाहौर) के मुक़ीम इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं ने दा'वते इस्लामी के तह़्त रमज़ानुल मुबारक में होने वाले पूरे माहे रमज़ान के ए'तिकाफ़ में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल की । जदवल के मुत़ाबिक़ नमाज़े फ़ज्र के बा'द कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ से 3 आयात का तर्जमा व तफ़्सीर का मदनी ह़ल्क़ा लगाया गया, नमाज़े इशराक़ व चाश्त अदा करते ही हर त़रफ़ से सदा बुलन्द होने लगी : **''सो जाइये, मदीने की यादों में खो जाइये ।''** मैं ने मदीना शरीफ़ का तसव्वुर किया और सुन्नत के मुत़ाबिक़ लेट गया, जूंही मेरी आंख लगी मैं ने ख़्वाब में देखा कि बिल्कुल फ़ैज़ाने मदीना की त़रह़ मो'तकिफ़ इस्लामी भाइयों के ह़ल्क़े ख़ानए का'बा शरीफ़ में लगे हुवे हैं । हर त़रफ़ नूर ही नूर है, इतने में क्या देखता हूं कि हमारे

www.dawateislami.net

मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक जानिब से तशरीफ़ ला रहे हैं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे पीछे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी आ रहे हैं । मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर ह़ल्क़े में तशरीफ़ ले जाते और इस्लामी भाई अपने आक़ा के दीदार का शरबत पीते । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई, फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : "इल्यास ! तुम ने येह बहुत अच्छा काम किया कि इन सब को 30 दिन के लिये यहां इकठ्ठा किया है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर नज़रे रह़मत फ़रमाए ।"

जल्वए यार की आरज़ू है अगर मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मीठे आक़ा करेंगे करम की नज़र मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
चोट खा जाएगा इक न इक रोज़ दिल मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
फ़ज़्ले रब से हिदायत भी जाएगी मिल मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
तुम को राह़त की ने'मत अगर चाहिये मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
बन्दगी की भी लज़्ज़त अगर चाहिये मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
फ़ाक़ा मस्ती का ह़ल भी निकल आएगा मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रोज़गार اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मिल जाएगा मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
सीखने ज़िन्दगी का क़रीना चलो मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
देखना है जो मीठा मदीना चलो मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मौत फ़ज़्ले ख़ुदा से हो ईमान पर मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रब की रह़मत से जन्नत में पाओगे घर मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मान भी जाओ 'अ़त्तार' की इल्तिजा मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
होगा राज़ी ख़ुदा, ख़ुश शहे अम्बिया मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने सुना कि माहे रमज़ान कितनी शानो अ़ज़मत वाला महीना है, इस माह के इस्तिक़्बाल के लिये जन्नत को सजाया जाता है और इस के दरवाज़े, उम्मते मुह़म्मदिय्या के रोज़ादारों के लिये खोल दिये जाते हैं । प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को इस महीने की आमद की ख़ुश ख़बरी सुनाते और मुबारक बाद देते । क़ियामत के दिन रोज़ा और क़ुरआन बन्दे के ह़क़ में शफ़ाअ़त करेंगे । जब माहे ग़ुफ़रान की आमद होती तो प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इबादत के लिये कमर बस्ता हो जाते । इस माह की ख़ुसूसिय्यात में से येह भी है कि इसी में क़ुरआने करीम नाज़िल हुवा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उम्मते मुह़म्मदिय्या पर इस महीने के रोज़े फ़र्ज़ फ़रमाए हैं । रोज़ा एक ऐसी इबादत है जिस के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि "रोज़ा मेरे लिये है और इस की जज़ा मैं ख़ुद दूंगा ।" रोज़ादार के आ'ज़ा तस्बीह़ करते हैं, इस की दुआएं क़बूल होती हैं और इस का सोना इबादत में शुमार होता है । क़ियामत के दिन रोज़ादारों के लिये सोने का दस्तर ख़्वान रखा जाएगा ह़ालांकि लोग ह़िसाब के मुन्तज़िर होंगे । रोज़ादारों का जन्नत में दाख़िला भी ख़ास दरवाज़े से होगा जिस का नाम **'रय्यान'** है और इस से सिर्फ़ रोज़ादार ही जन्नत में दाख़िल होंगे । रमज़ान में शबे क़द्र को पोशीदा रखा गया है जो हज़ार महीनों से अफ़्ज़ल है । इस रात को ह़ासिल करने के लिये ए'तिकाफ़ किया जाता है । जो ईमान के साथ सवाब ह़ासिल करने की निय्यत से ए'तिकाफ़ करे, उस के तमाम पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं, मो'तकिफ़ मस्जिद में रह कर गुनाहों से बचा रहता है लेकिन बाहर रह कर जो नेकियां करता था उन का सवाब उसे ए'तिकाफ़ में भी मिलता रहेगा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी रमज़ानुल मुबारक की ख़ूब ख़ूब बरकतें

www.dawateislami.net

ह़ासिल करने के लिये ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत का तआ़रुफ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों की तर्बिय्यत और नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये दा'वते इस्लामी के तह़्त ढेरों शो'बाजात क़ाइम हैं । इन में से एक इन्तिहाई अहम शो'बा 'दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत' भी है । दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 102 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, 'इ़ल्मो ह़िक्मत के 125 मदनी फूल' सफ़ह़ा 21 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का एक फ़रमान कुछ यूं नक़्ल है कि बहुत अ़र्से क़ब्ल किसी दीनी मद्रसे से वाबस्ता इस्लामी भाई ने मुझे बताया कि "हमारे यहां जब कोई कम पढ़ा लिखा साइल, मस्अला दरयाफ़्त करने के लिये आता है तो बसा अवक़ात अन्दाज़े बयान या त़र्ज़े तह़रीर पर उसे ख़ूब झाड़ पिलाई जाती है, मसलन कहा जाता है : कहां पढ़े हो ! आप को उर्दू में सुवाल लिखने का भी ढंग नहीं मा'लूम ! वग़ैरा, इस त़रह़ लोग बद ज़न हो कर चले जाते हैं, उन की परवा नहीं की जाती । आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : येह बातें सुन कर मेरे दिल पर चोट लगी और मेरे मुंह से निकला "اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हम 12 दारुल इफ़्ता खोलेंगे ।" शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का येह ख़्वाब 15 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सिने 1421 हिजरी को उस वक़्त पूरा हुवा जब जामेअ़ मस्जिद कन्ज़ुल ईमान, बाबरी चौक बाबुल मदीना (कराची) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के तह़्त दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत का आग़ाज़ हुवा । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे बयान बाबुल मदीना (कराची) में चार दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत क़ाइम हैं,

www.dawateislami.net

इस के इलावा ज़म ज़म नगर (हैदराबाद), सरदाराबाद (फ़ैसलाबाद), मर्कज़ुल औलिया (लाहौर) रावल पिन्डी और गुलज़ारे तैबा (सरगोधा) में दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुखयारी उम्मत की शरई रहनुमाई में मसरूफ़े अमल हैं।

इस के इलावा 'मजलिसे इफ़्ता' के तह्त काम करने वाले शो'बे 'दारुल इफ़्ता ऑन लाइन' के इस्लामी भाई भी इन्तिहाई ज़िम्मेदारी के साथ टेलीफ़ोन और इन्टरनेट पर दुन्या भर के मुसलमानों की त़रफ़ से पूछे जाने वाले मसाइल का हाथों हाथ ह़ल बताते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस शो'बे से तअ़ल्लुक़ रखने वाले इस्लामी भाई रोज़ाना सेंकड़ों सुवालात के जवाबात देते हैं। दारुल इफ़्ता ऑन लाइन से, इन्टरनेट के ज़रीए, दुन्या भर से इस मेल एड्रेस (darulifta@dawateislami.net) से सुवालात के जवाबात पूछे जा सकते हैं। दुन्या भर से हाथों हाथ शरई रहनुमाई ह़ासिल करने के लिये, इन नम्बर्ज़ पर राबित़ा किया जा सकता है। नम्बर नोट फ़रमा लीजिये।

0300-0220112	0300-0220113
0300-0220114	0300-0220115

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

12 मदनी कामों में ह़िस्सा लीजिये!

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! हर लम्ह़ा दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये और ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये। ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम मद्रसतुल मदीना बालिग़ान भी है। मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में क़ुरआने पाक की मुफ़्त ता'लीम दी जाती है और क़ुरआने पाक सीखने सिखाने की बड़ी फ़ज़ीलत है। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''خَیْرُکُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَہٗ या'नी तुम में बेहतरीन शख़्स वोह है, जिस ने क़ुरआन सीखा और दूसरों को सिखाया। (بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب خیرکم من تعلم القرآن...الخ، ۳/۴۱۰، حدیث:۵۰۲۷)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक सीखने सिखाने की ज़रूरत व अहम्मिय्यत के पेशे नज़र क़ुरआने पाक की ता'लीमात को आ़म करने के लिये दा'वते इस्लामी के तह़्त इस्लामी भाइयों के लिये उ़मूमन बा'द नमाज़े इ़शा मुख़्तलिफ़ मसाजिद वग़ैरा में हज़ारहा मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की तरकीब होती है और इस्लामी बहनों के लिये मुख़्तलिफ़ मक़ामात व अवक़ात में हज़ारहा मद्रसतुल मदीना बालिग़ात की तरकीब होती है, इस्लामी भाई, इस्लामी भाइयों से और इस्लामी बहनें, इस्लामी बहनों से पढ़ती हैं, हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ क़ुरआने करीम सीखने के साथ साथ मुख़्तलिफ़ दुआ़एं याद करते, नमाज़ के मसाइल सीखते और सुन्नतों की मुफ़्त ता'लीम ह़ासिल करते हैं। लिहाज़ा आप भी अपनी दुन्या व आख़िरत की भलाई के लिये मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में ज़रूर शिर्कत फ़रमाएं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث:۱۷۵)

सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें

नेक हो जाएं मुसलमान मदीने वाले

www.dawateislami.net

"चल मदीना" के सात हुरूफ़ की निस्बत से जूते पहनने के 7 मदनी फूल

﴾1﴿ **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जूते ब कसरत इस्ति'माल करो कि आदमी जब तक जूते पहने होता है गोया वोह सुवार होता है । (या'नी कम थकता है) (مُسلِم ص ۱۱۶۱ حدیث ۲۰۹۶)

﴾2﴿ जूते पहनने से पहले झाड़ लीजिये ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए ।

﴾3﴿ पहले सीधा जूता पहनिये फिर उलटा और उतारते वक़्त पहले उलटा जूता उतारिये फिर सीधा ।

﴾4﴿ मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना जूता इस्ति'माल करे ।

﴾5﴿ सदरुश्शरीआ़ बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं **:** औ़रतों को मर्दाना जूता नहीं पहनना चाहिये बल्कि वोह तमाम बातें जिन में मर्दों और औ़रतों का इमतियाज़ होता है उन में हर एक को दूसरे की वज़्अ़ इख़्तियार करने (या'नी नक़्क़ाली करने) से मुमानअ़त है, न मर्द औ़रत की वज़्अ़ (त़र्ज़) इख़्तियार करे, न औ़रत मर्द की । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा **16**, स. **65** मक्तबतुल मदीना)

﴾6﴿ जब बैठें तो जूते उतार लीजिये कि इस से क़दम आराम पाते हैं ।

﴾7﴿ (तंगदस्ती का एक सबब येह भी है कि) औंधे जूते को देखना और उस को सीधा न करना, लिहाज़ा इस्ति'माली जूता उलटा पड़ा हो तो सीधा कर दीजिये ।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा **16** (**312** सफ़ह़ात) नीज़ **120** सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

ख़ूब होगा सवाब और टलेगा अ़ज़ाब पाओगे बख़्शिशें, क़ाफ़िले में चलो
दिल पे गर ज़ंग हो, सारा घर तंग हो दाग़ सारे धूलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 7 दुरूदे पाक

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الْحَبِیْبِ الْعَالِی الْقَدْرِ الْعَظِیْمِ الْجَاہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रहमत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلِّمْ

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ۶۵)

﴾3﴿ रहमत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रहमत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۲۷۷)

﴾4﴿ एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا ھُوَ اَھْلُہٗ

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

www.dawateislami.net

﴾5﴿ छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْکِ اللّٰہِ

हज़रते अहमद सावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** हासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

﴾6﴿ कुर्बे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया । इस से सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है !!!** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵)

﴾7﴿ दुरूदे शफ़ाअ़त :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَکَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

शाफ़ेए उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج ۲ ص ۳۲۹، حدیث ۳۱)

हर रात इबादत में गुज़ारने का आसान नुस्ख़ा

ग़राइबुल कुरआन सफ़हा 187 पर एक रिवायत नक़्ल की गई है कि जो शख़्स रात में येह दुआ 3 मरतबा पढ़ लेगा तो गोया उस ने शबे क़द्र को पा लिया । लिहाज़ा हर रात इस दुआ को पढ़ लेना चाहिये ।

दुआ येह है :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْم

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. **1163-1164**)

www.dawateislami.net